



एक यात्रा

चित्र एवं कथा
जगदीश जोशी

ISBN 978-81-237-6394-1

पहला संस्करण : 2012

पहली आवृत्ति : 2013 (शक 1934)

© जगदीश जोशी, 2012

EK YAATRA (Hindi)

₹ 30.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

एक यात्रा

चित्र एवं कथा
जगदीश जोशी

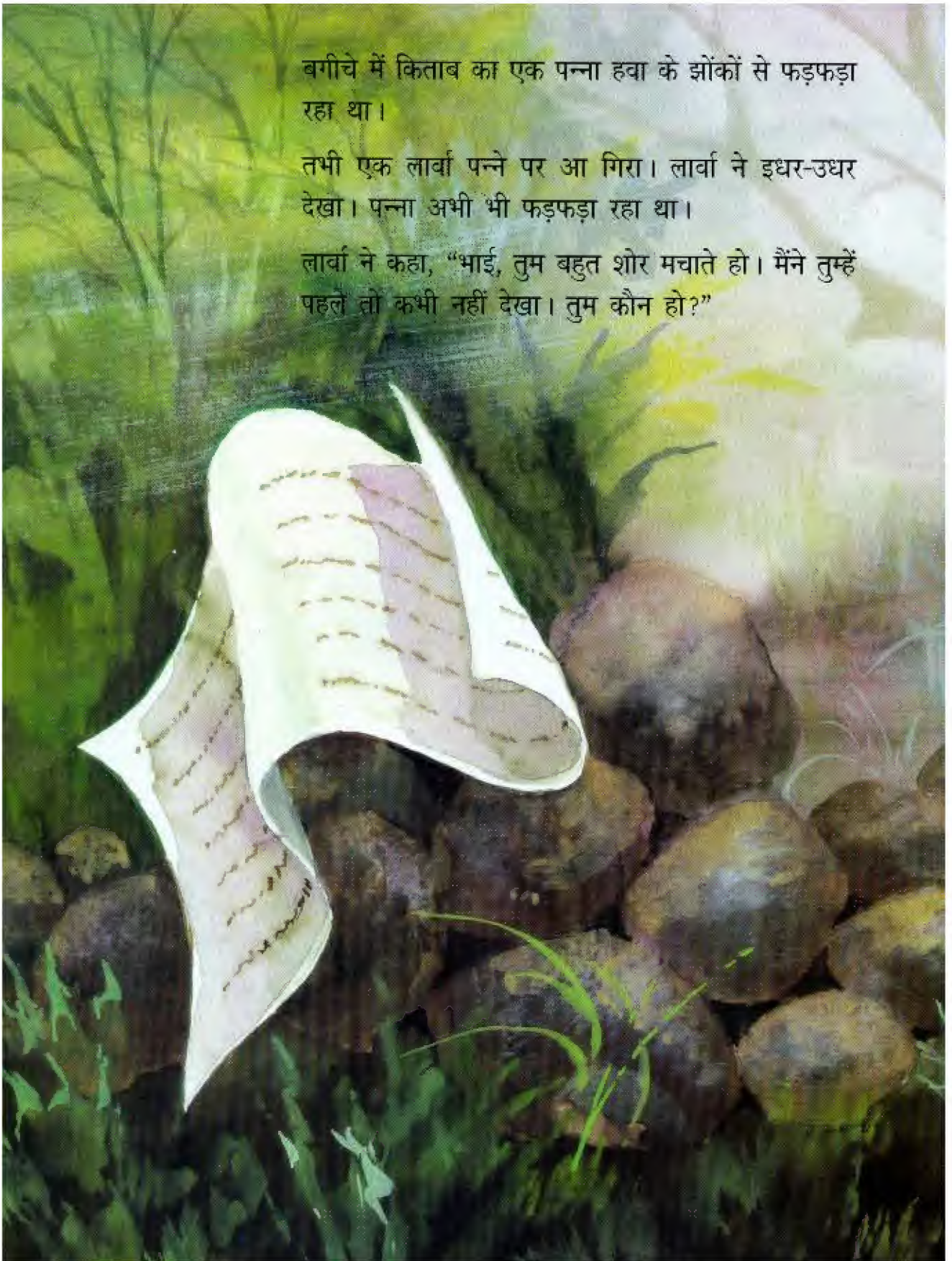


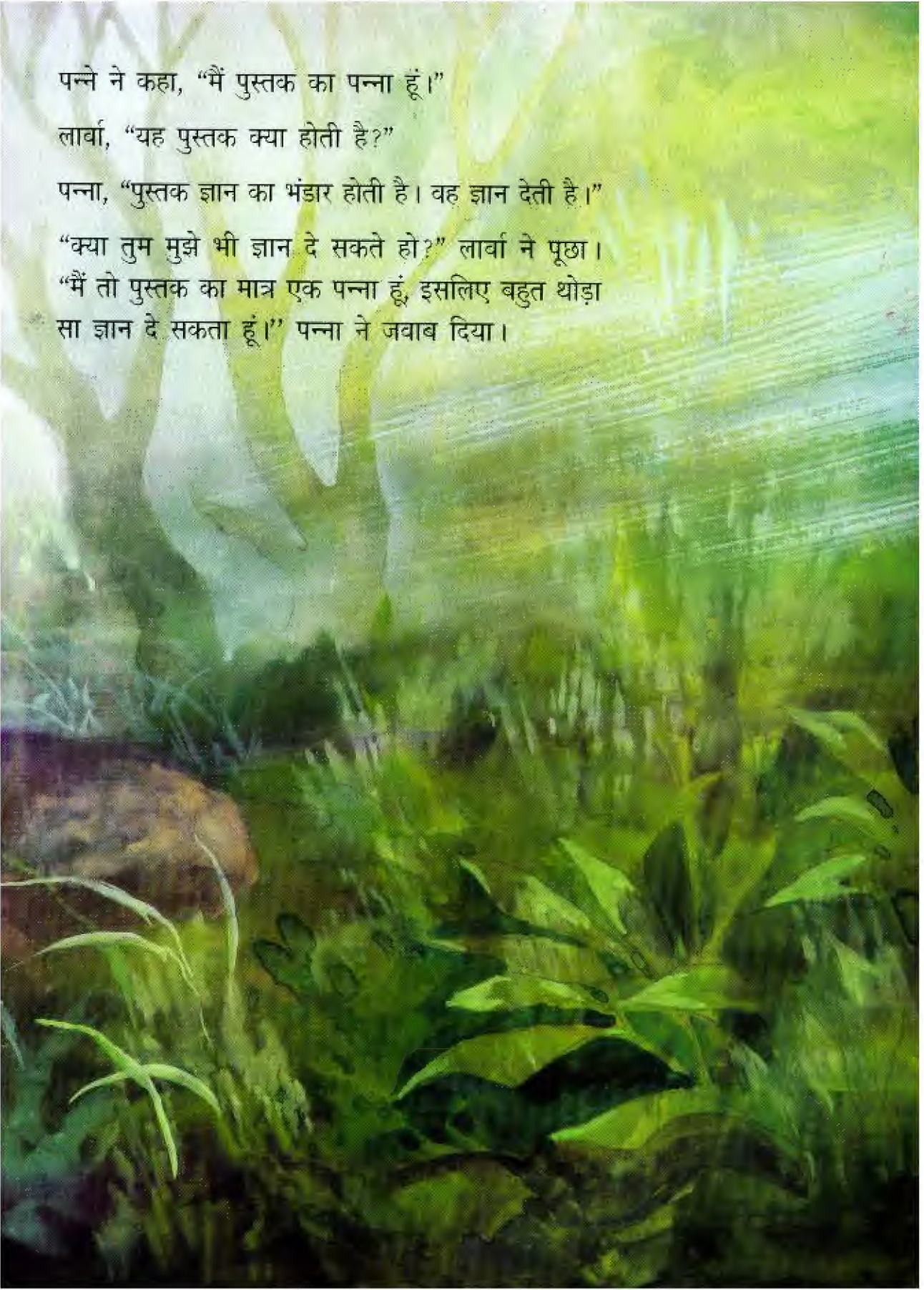
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

बगीचे में किताब का एक पन्ना हवा के झोंकों से फड़फड़ा रहा था।

तभी एक लार्वा पन्ने पर आ गिरा। लार्वा ने इधर-उधर देखा। पन्ना अभी भी फड़फड़ा रहा था।

लार्वा ने कहा, “भाई, तुम बहुत शोर मचाते हो। मैंने तुम्हें पहले तो कभी नहीं देखा। तुम कौन हो?”





पन्ने ने कहा, “मैं पुस्तक का पन्ना हूँ।”

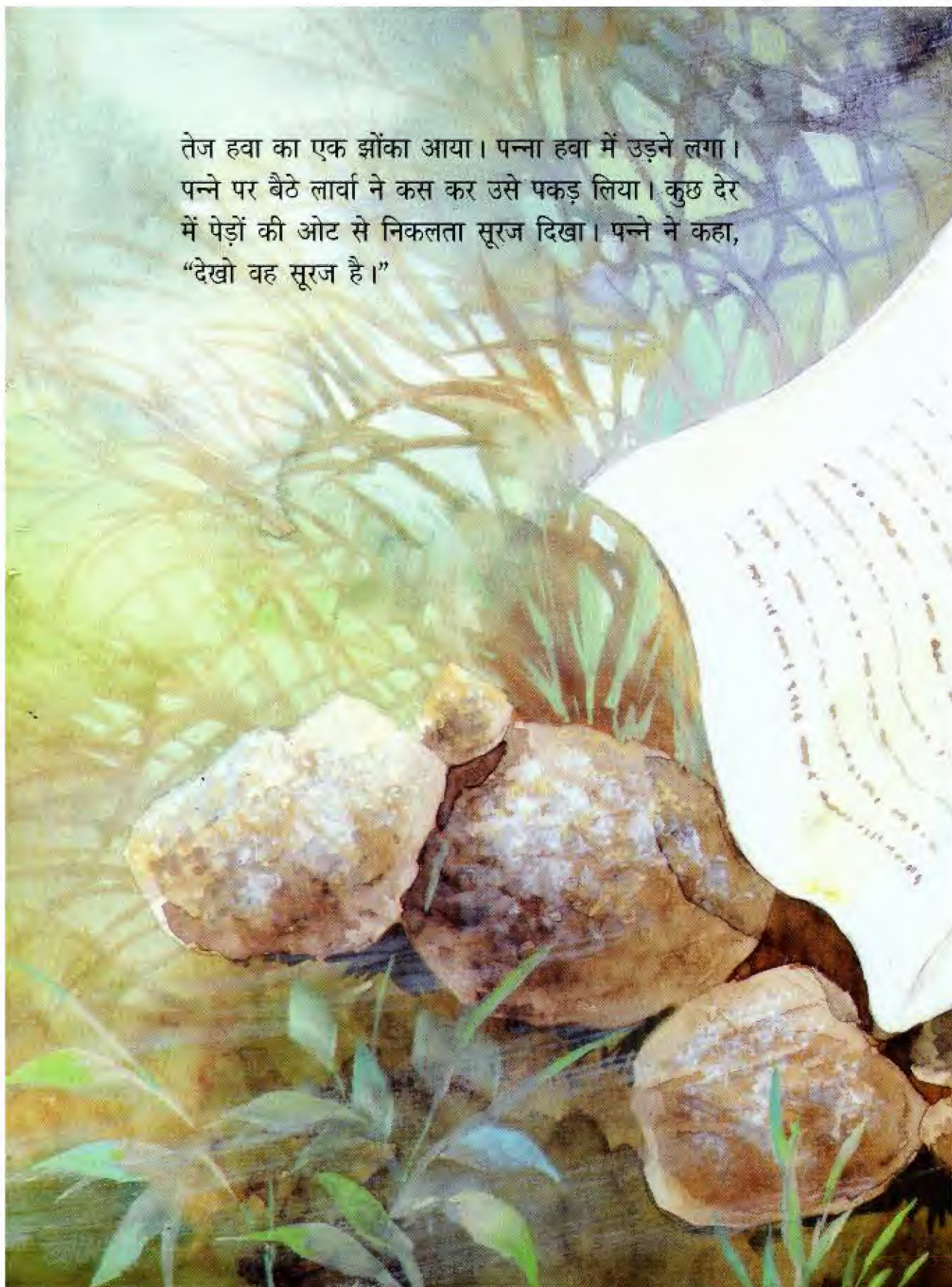
लार्वा, “यह पुस्तक क्या होती है?”

पन्ना, “पुस्तक ज्ञान का भंडार होती है। वह ज्ञान देती है।”

“क्या तुम मुझे भी ज्ञान दे सकते हो?” लार्वा ने पूछा।

“मैं तो पुस्तक का मात्र एक पन्ना हूँ, इसलिए बहुत थोड़ा सा ज्ञान दे सकता हूँ।” पन्ना ने जवाब दिया।

तेज हवा का एक झोंका आया। पन्ना हवा में उड़ने लगा।
पन्ने पर बैठे लार्वा ने कस कर उसे पकड़ लिया। कुछ देर
में पेड़ों की ओट से निकलता सूरज दिखा। पन्ने ने कहा,
“देखो वह सूरज है।”








लारवा – “जानता हूं। रात के बाद जब सूरज आता है, मुझे बहुत अच्छा लगता है। मौसम में गरमाहट आ जाती है। मैं तो पत्तों पर खुशी से नाचने लगता हूं और एक बात बताऊं? मेरी मां भी मुझे तभी देखने आती है।”





पन्ना उड़ता हुआ एक पहाड़ी के पास पहुँच गया। पन्ने ने कहा, “देखो यह पहाड़ है। उसने बादलों को रोक रखा है। बादल थोड़ी देर में ठंडे हो कर बरसने लगेंगे।”



A water droplet is shown falling from the edge of a large, green, textured leaf. The background is a soft, light pink color with some subtle vertical streaks. The droplet is captured mid-fall, creating a small splash at the bottom.

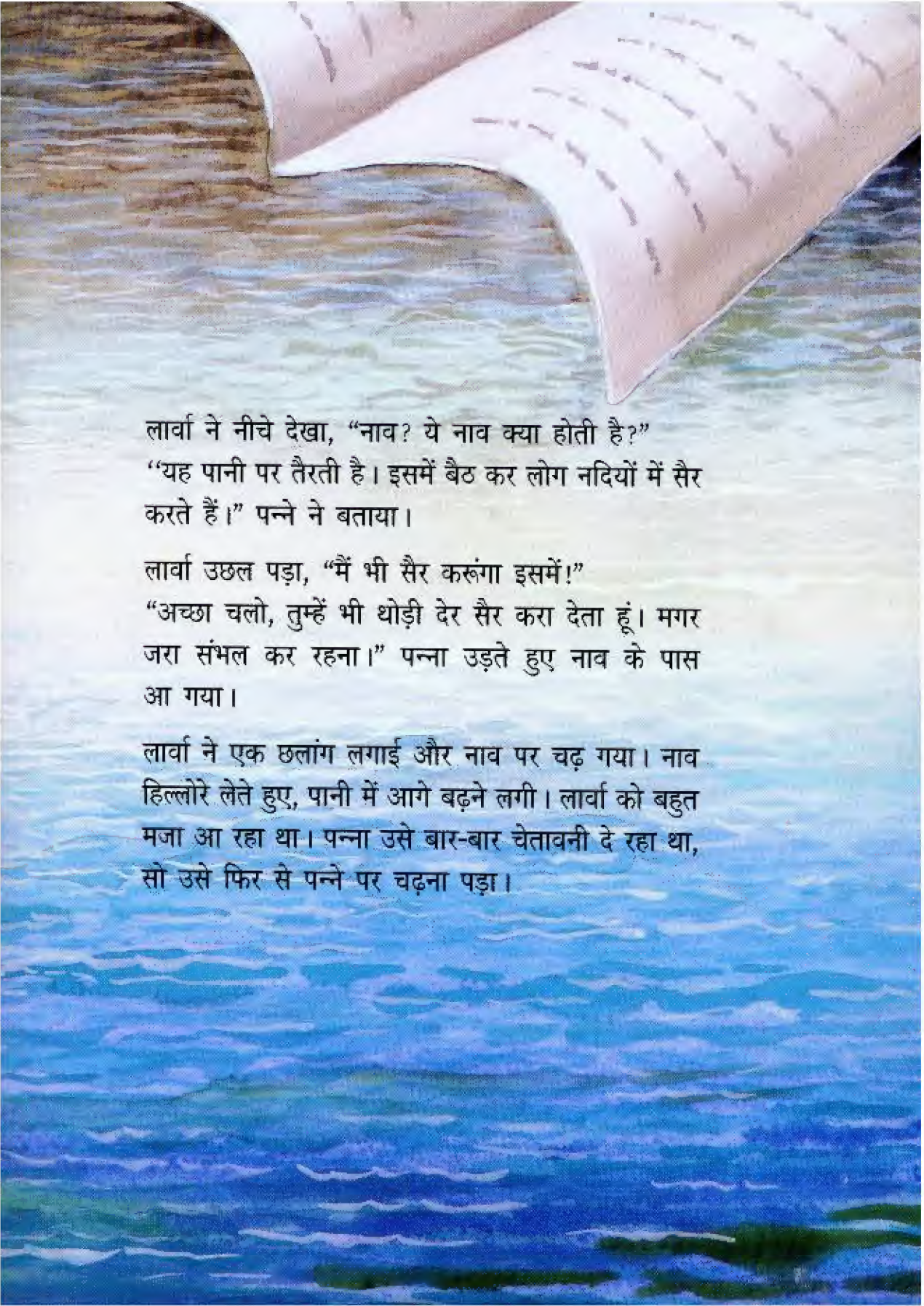
“मुझे भी बारिश अच्छी लगती है, पर जब कभी बारिश के साथ पत्थर भी गिरने लगते हैं, मैं डर कर पत्तों के नीचे छिप जाता हूँ।” लार्वा बोला

“अरे भाई वे पत्थर नहीं, बल्कि ठंड से जमा पानी यानी ओले होते हैं।” पन्ने को हंसी आ गई।



पन्ना – “भाई, तुम बोलते बहुत हो। जरा नीचे तो देखो।
बारिश का पानी नदी-नालों में बह रहा है। और वह देखो!
किसी बच्चे ने कागज की नाव पानी में बहा दी है।”



The background of the page is a painting of a body of water. In the upper right, a small, light-colored boat with a curved hull is visible, floating on the water. The water is depicted with various shades of blue and green, showing ripples and waves. The overall style is painterly and somewhat abstract.

लार्वा ने नीचे देखा, “नाव? ये नाव क्या होती है?”

“यह पानी पर तैरती है। इसमें बैठ कर लोग नदियों में सैर करते हैं।” पन्ने ने बताया।

लार्वा उछल पड़ा, “मैं भी सैर करूंगा इसमें!”

“अच्छा चलो, तुम्हें भी थोड़ी देर सैर करा देता हूं। मगर जरा संभल कर रहना।” पन्ना उड़ते हुए नाव के पास आ गया।

लार्वा ने एक छलांग लगाई और नाव पर चढ़ गया। नाव हिल्लोरे लेते हुए, पानी में आगे बढ़ने लगी। लार्वा को बहुत मजा आ रहा था। पन्ना उसे बार-बार चेतावनी दे रहा था, सो उसे फिर से पन्ने पर चढ़ना पड़ा।

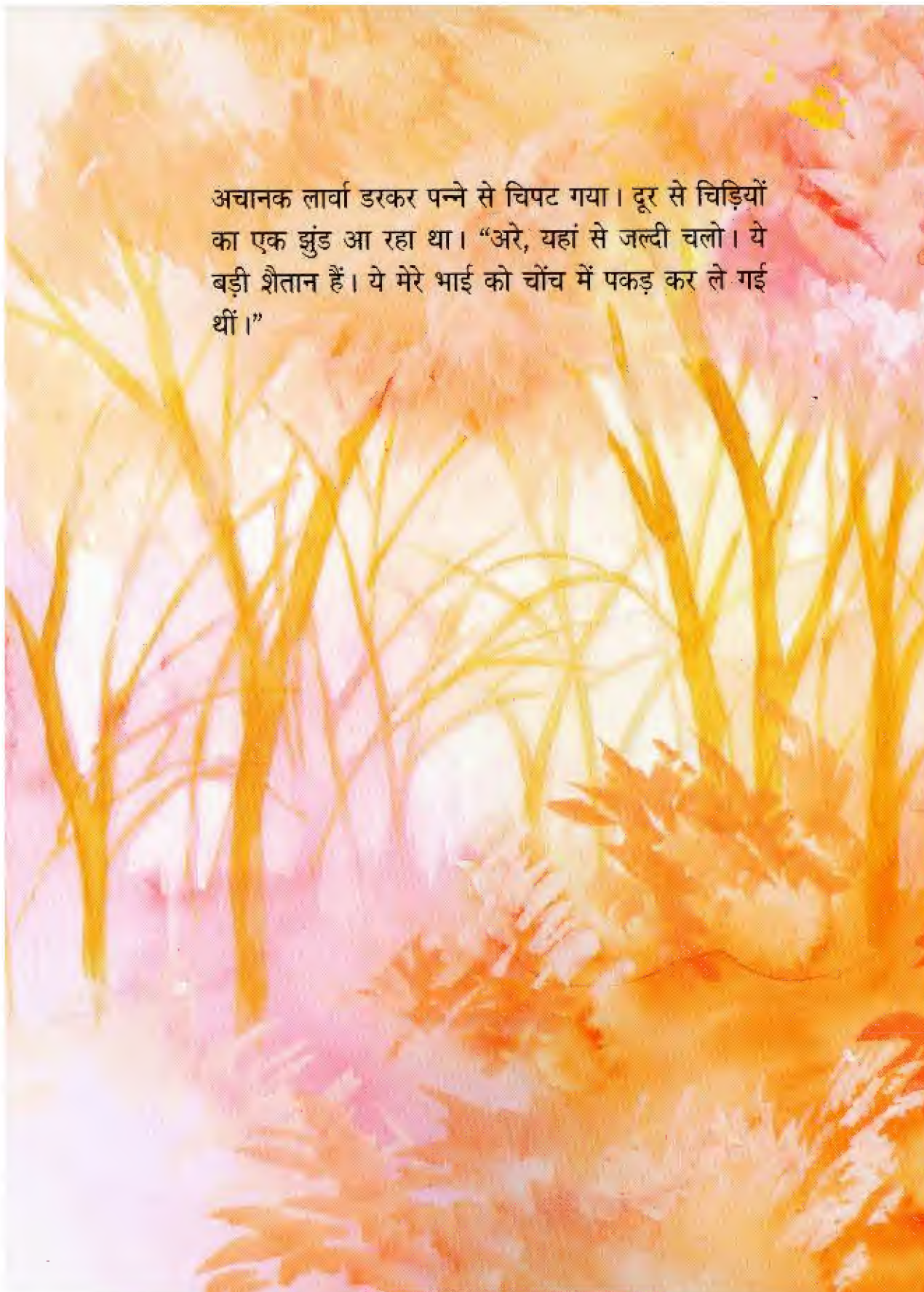
दोनों कुछ और आगे बढ़े। कुछ बच्चे
खेल रहे थे।

पन्ना, “देखो, बच्चे कैसे मजे में
खेल रहे हैं।”

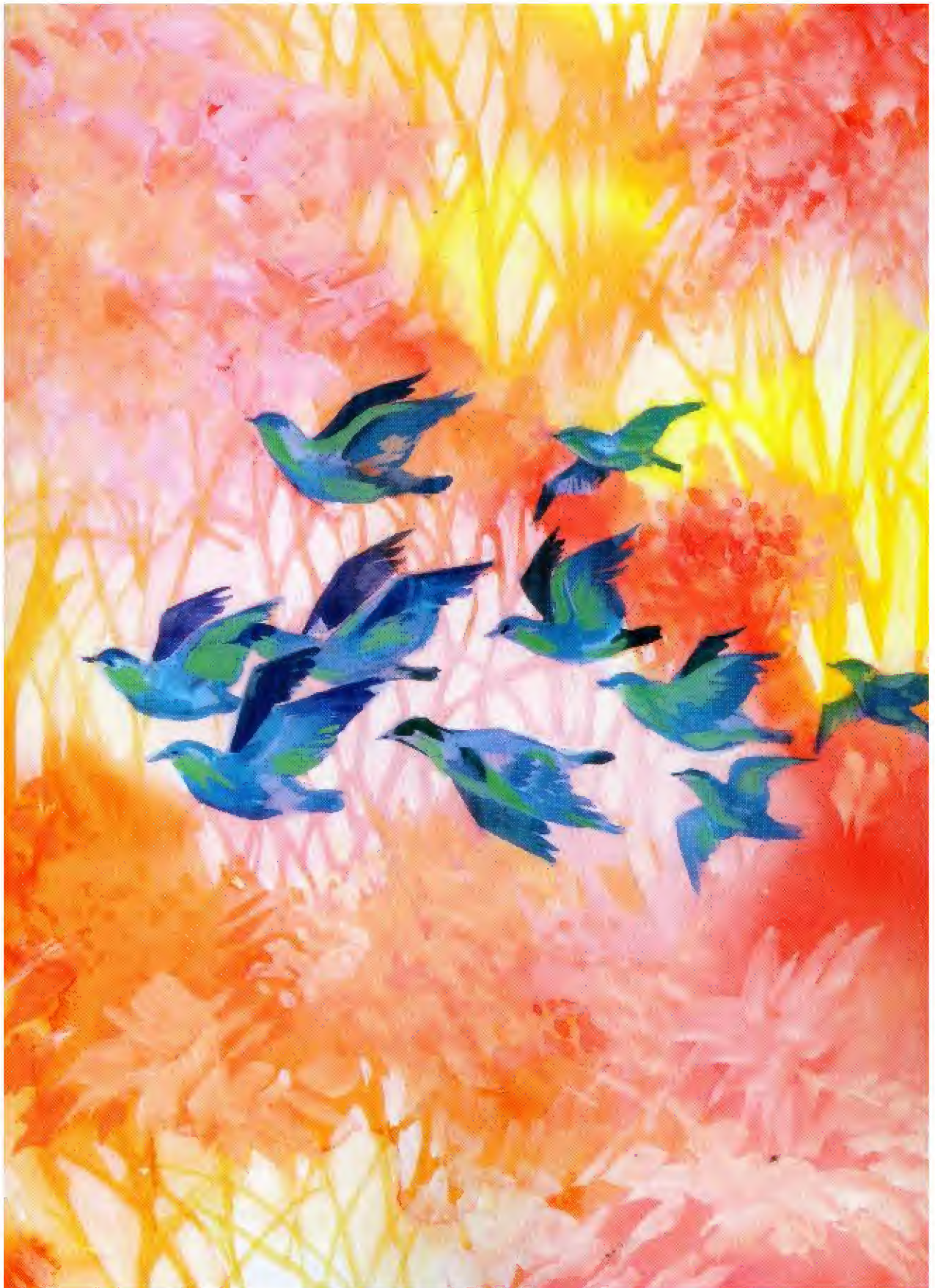


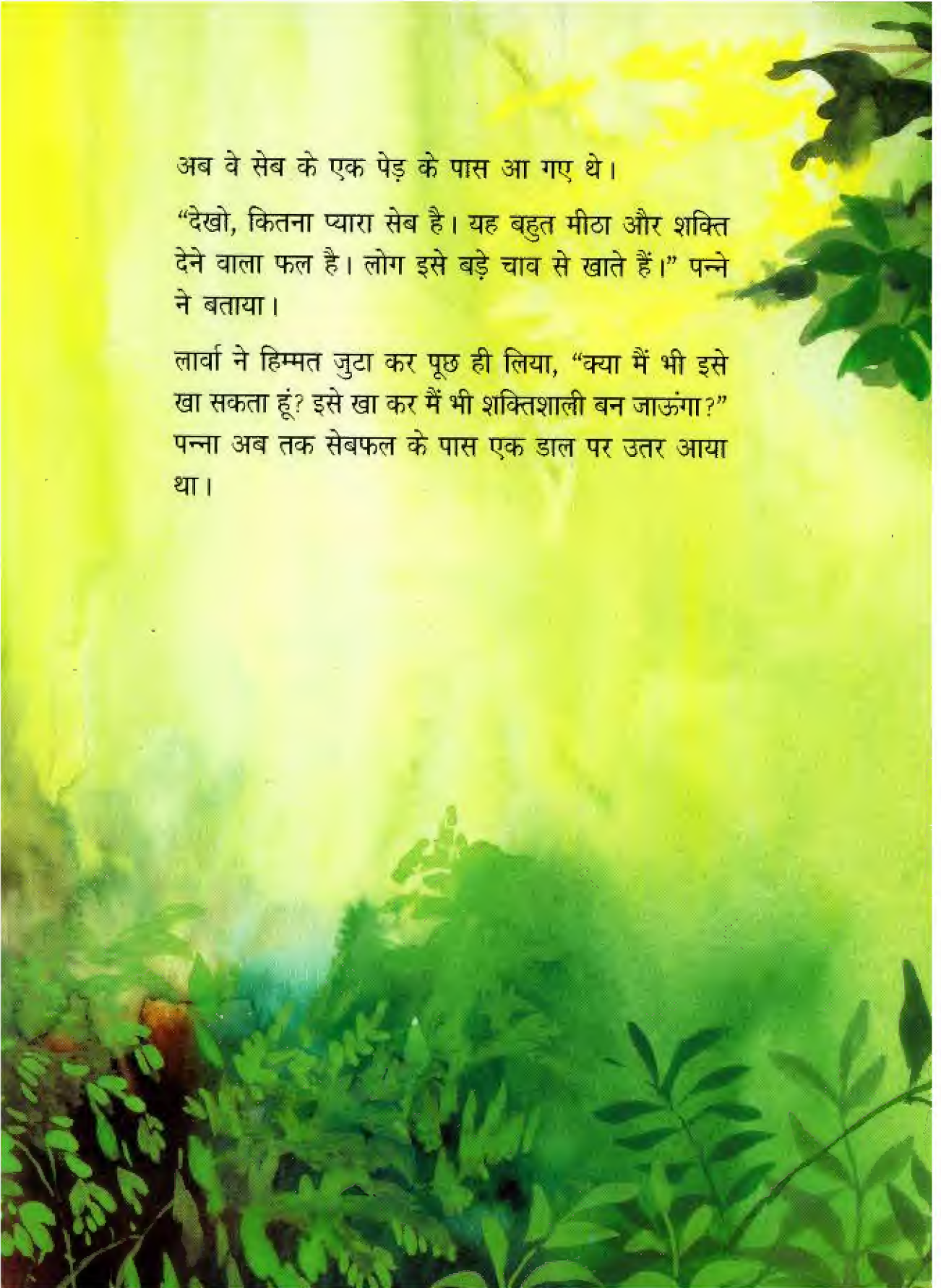
लार्वा, “मुझे ये बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। ये मेरी मां को बहुत तंग करते हैं। उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे भागते रहते हैं।”





अचानक लार्वा डरकर पन्ने से चिपट गया। दूर से चिड़ियों का एक झुंड आ रहा था। “अरे, यहां से जल्दी चलो। ये बड़ी शैतान हैं। ये मेरे भाई को चोंच में पकड़ कर ले गई थीं।”

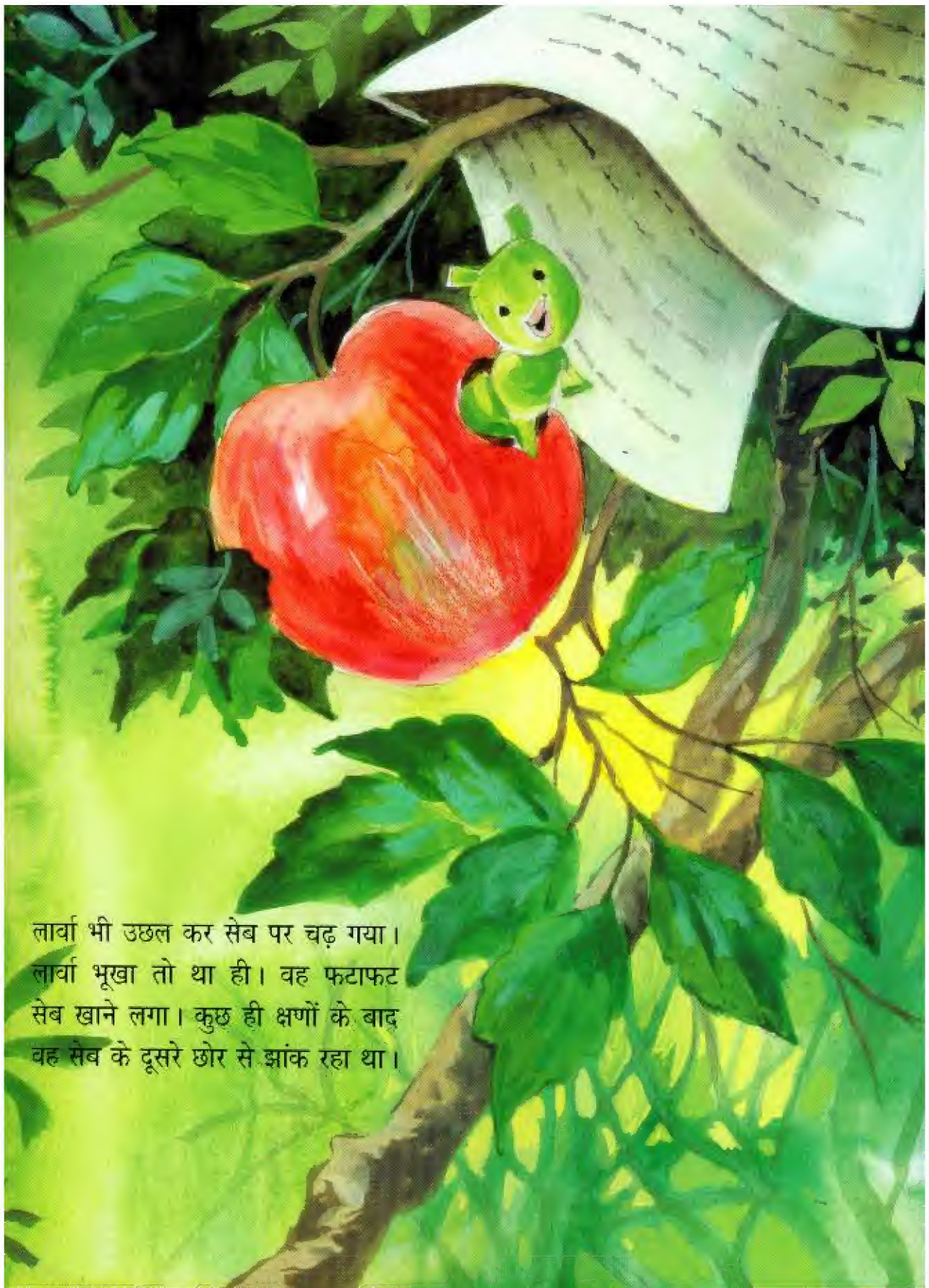




अब वे सेब के एक पेड़ के पास आ गए थे।

“देखो, कितना प्यारा सेब है। यह बहुत मीठा और शक्ति देने वाला फल है। लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं।” पन्ने ने बताया।

लार्वा ने हिम्मत जुटा कर पूछ ही लिया, “क्या मैं भी इसे खा सकता हूँ? इसे खा कर मैं भी शक्तिशाली बन जाऊंगा?” पन्ना अब तक सेबफल के पास एक डाल पर उतर आया था।



लार्वा भी उछल कर सेब पर चढ़ गया।
लार्वा भूखा तो था ही। वह फटाफट
सेब खाने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद
वह सेब के दूसरे छोर से झांक रहा था।





पन्ना – “आओ अब चलें।”

लार्वा पन्ने पर चढ़ गया। हवा के एक जोरदार झोंके के साथ ही पन्ना फिर से हवा में लहराने लगा। लार्वा ने एक जोरदार अंगड़ाई ली। थोड़ी देर में उसने धागों की चादर बुनी और ओढ़ कर सो गया। पन्ना आश्चर्य से देखता रह गया।

अब हवा भी थम गई थी। पन्ना धीरे-धीरे
जमीन पर झाड़ियों के पास आ गिरा।

कुछ दिनों बाद लार्वा अपनी चादर से निकला।
लेकिन वह तो एकदम बदल गया था! वह
अपने नए रूप से बहुत खुश था। कुछ देर तक
वह अपने पंख फड़फड़ाता रहा।





उसने पन्ने को धन्यवाद कहा और एक
नए जीवन की शुरुआत के लिए उड़ चला।
किताब का पन्ना भी हवा में फड़फड़ाया,
मानो उसे अलविदा कह रहा हो।



मुद्रक: मैसर्स चन्दू प्रेस, डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

